International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 130-132

राजस्थान की लोक कला 'रम्मत' का सांगीतिक अध्ययन

Dr. Aruna Jangid*

सार

प्रस्तुत शोध में 'रम्मत' लोकनाट्य कला के संगीत पक्ष को उजागर करने पर कार्य किया गया है। रम्मत पूरी तरह संगीतात्मक संवाद के रूप में अभिनीत होता है। रंगमंच के दर्शकों को कथानक से परिचित होते है इसलिए कथा से प्राप्त मनोरंजन इनका लक्ष्य नही होता बल्कि रसानुभूति द्वारा प्राप्त तृप्ति इनके लिए संतोष की बात होती है। इसके पात्रों में स्त्री–पात्रों की भूमिका पुरुष पात्रों द्वारा ही स्त्री रूप धारण कर मंच पर मंचित की जाती है। लोकपरक अनुभूति और मनोरंजन का स्वस्हय स्वरूप इनमें उपलब्ध रहता है। इन प्रसंगों को किसी भी समय गावों में गम्मत' या मनोरंजन के अवसर पर देखा जा सकता है। उसके नायक की विशेषताओं को प्रगट करने की अपेक्षा उसके द्वारा खलनायक और अन्य पात्रों की विकृतिया अधिक अच्छे देश से प्रस्तुत की जाती है। रम्मत का मंच 'मुक्तकाशी' खुला मंच होता है। रम्मत लोकनाट्य में लोकधुनों के अनुकरण की प्रवृति स्पष्ट रूप से झलकती है। ''रम्मत करे जिको मंजा लूटे।'' तो कौन फिर रम्मत करना और मजे लेना नही चाहेगा। यह रात भर चलकर सुबह सात बजे तक चलती है। यह सोद्देश्य होती है अंत में कुछ शिक्षा के रूप में अमिट प्रभाव डालती है। रम्मत में पारम्परिक वाद्य नगाड़ा के हारमोनियम की प्रधानता है रम्मत में सारी रचनात्मक ऊर्जा संगीत से ही अभिव्यक्त होती है राजस्थान अंचल में आज भी 'रम्मत' का मंचन होली से पूर्व कई शहरों में होता है जहाँ कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

शब्दकोशः *गम्मत, नगाड़ा, मुक्ताकाशी, संगीतात्मक, कंथानक।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में लोक शब्द के कई अर्थ समझे व लिए जाते हैं। कुछ विद्वान लोक का अर्थ मानव सम्प्रदाय के उस वर्ग से सम्बोधिक करते है। जो कि सभ्यताओं से कम प्रभावित हुआ है। लोक नाट्यों की उत्पत्ति लोक के मनोभावों जैसे समाज की आदिम प्रवृतियाँ और भावनाएँ उसके हष, उल्लास, शोक, प्रेम, ईर्ष्या, भय, आशंका, घृणा, आश्चर्य, ग्लानि, भक्ति, आराधना इत्यादि से होती है। रामायण –महाभारत के अनेक स्थलों पर और हिन्दी साहित्य की ओजपूर्ण कविताओं में नौटंकी की चर्चा भले न हो, किन्तु नौटंकी का 'प्राण' कहे जाने वाले आदि और अवनद्ध वाद्य नक्कारा का वर्णन मानों साधिकार हुआ है। स्वाँग देखना, स्वाँग भरना, स्वाँग किसी भी ऐसे प्रदर्श को कहा जाता है रम्मत में कई प्रतापी व्यक्तियों पर सर्वाधिक सांगीत रचे गए हैं उनमें पोरस, सिकन्दर, सम्राट अशोक, महाराणा प्रताप, राजा बच्चुसिंह, दयाराम, गूर्जर, रजा रघुवीर जैसे विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों पर साँगीत लिखे गए हैं। देशभक्ति के परिपूर्ण घटना तथा नेताओं के जीवन पर रचे गए स्वाँग में जलियावाले बाग की घटना पर रची नौटंकी 'खूने नाहक' इत्यादि जीवनी पर रचे गए साँगीत उल्लेखनीय किये गए हैं।

* PGT Music Teacher, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India.

रम्मत में वर्तमान विषय के परिप्रेक्ष्य में व गहन राजनीतिक मुद्दों पर लिखे दोहे, चौबोले, व लावणी इत्यादि रचे जाते है। व संगीत बद्ध करके दर्शकों तक पहुँचाया गया है। शोध में रम्मत शब्द का अर्थ उसके विकास, उत्पत्ति के तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

साहित्य की समीक्षा

लोक संगीत की परिभाषा व उत्पति में राजस्थान के लोक संगीत की विशेषता व राजस्थान के लोकगीतों से किस प्रकार रम्मत लोकनाट्य के साहित्य की जानकारी प्राप्त होती है इसका वर्णन किया गया है कई विद्वानों के प्रचलित मत लोक संगीत व उसके साहित्य के बारे में जानकारी देते है। लोक संगीत स्थानीय सांस्कृतिक परम्परा से प्रसूत होता है इसमें स्थानीय जन स्वभाव, जनरुचि, आचार–विचार सब कुछ घुला हुआ होता है। रम्मत लोकनाट्य का इतिहास आज भी राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, चितौड़गढ़ इत्यादि शहरों में आए भी जीवित है। रम्मत लोकनाट्य का साहित्य लोकशैली में है जिसे आम जनता सहज रूप से समझ सके। इसमें संगीत पक्ष की प्रधानता इस नाट्य को और रुचिकर बनाती है। कई वर्तमान रम्मत के कलाकारों का साक्षात्कारइस शोध में किया गया है जिसमें हमें 'रम्मत' कला की उत्पत्ति व विकास व इसका पालन–पोषण कहाँ हुआ और आज भी यह भारत के उत्तरप्रदेश, राजस्थान में प्रदर्शित होने वाली कलाओं में से है।

उद्देश्य

लोकसंगीत हमारे जीवन का आधार है और हमारे संस्कृति के आधार को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। 'रम्मत' लोककला अपने आप में एक परिपूर्ण कला है। मैंने बचपन से इस कला का प्रदर्शन देखा है तब से ही यह विचार मन में था कि मुझे इस कला के कलाकारों को प्रोत्साहित करना है और इसके विकास के लिए कार्य करना है। सर्वप्रथम इसका प्रदर्शन किसी उत्सव मात्र तक न रहकर हमारे बाकी सामाजिक उत्सवों व राष्ट्रीय स्तर पर इसका मंचन हो क्योंकि यह कला सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है कलाकार इसमें जमाने के साथ–साथ चलने के लिए नए सृजन करता रहा है जिसमें ऐतिहासिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक मुद्दों पर नई पंक्तियाँ लिखी जाती है और उसको संगीतबद्ध करके सुरताल व नृत्य और अभिनय के साधन द्वारा आम जनता में जाग्रति फैलाने का कार्य भी करती है।

इसमें प्राचीन वाद्य यन्त्रों को साथ रखते हुए नए वाद्य यन्त्रों का उपयोग करके कला को ओर आकर्षित बनाने का प्रयास किया जा सकता है आज की युवा पीढ़ी भी बढ़ चढ़कर अपनी इस लोकनाट्य कला व संस्कृति को जीवित रखने में अपना सहयोग दे ऐसे प्रयासों के बारे में लिखा गया है। सांगीतिक पक्ष जिसमें कई प्रकार की लोकगायन शैलियों का प्रयोग इस नाट्य कला में होता है उनको स्वरबद्ध करके उसकी धुन को सुरक्षित रखने का कार्य भी करने का उद्देश्य रहा है।

शोधविधि

राजस्थान में लोक जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के लिए लोकनाट्य रचे गए हैं। उनका अपने तरीके से मंचन किया जाता है गीतों एवे नृत्य की प्रधानता के लिए नाट्यों में प्रतिकात्मक साज सज्जा से ही पात्रों की पहचान हो जाती है। अतः इस शोध कार्य को करने में मेरे लिए प्राथमिक प्रणाली जो साक्षात्कार प्रणाली है उससे मुझे ज्यादा सहायता मिली और साहित्य को जानने के लिए द्वितीयक प्रणाली पुस्तकालयों का भी सहयोग लिया गया है।

प्राथमिक प्रणाली

होली के सुनहरे अवसर पर चारों और जब मन्द–मन्द हवाएँ चलती है और पानी की फुहारे चित को प्रसन्नता देती है तब शहर में गाँवों में ''रम्मत'' कला की तेयारीयाँ शुरू हो जाती है कलाकार अभ्यास में जुट जाते है वो ही समय था साक्षात्कार का उनसे रूबरू मिलकर, देखकर ही इसके तथ्यों की और शोधकार्य को बढ़ाया गया है। साहित्यकार लक्ष्मीनारायण जी रंगा द्वारा शब्दों के अर्थ को समझने व नारायण जी रंगा और रामेश्वर जी सोनी द्वारा धुनों को समझने व लिखित रूप में उतारने में सहयोग प्राप्त किया गया।

- कलाकार जहां अभ्यास करते हैं उन अभ्यास स्थल पर जाकर छोटे से छोटे कलाकार तक साक्षात्कार विधि द्वारा ''रम्मत'' के बारे में जानकारी जुटाई गई।
- जननायक जी कल्ला, प्रबुद्ध रम्मत कलाकार नाटक 'नौटंकी शहजादी' पर साक्षात्कार लिया गया।
- रामेश्वर जी सोनी से हडाऊ मैरी की रम्मत की गायन शैलियों को समझा गया।
- युवा कलाकार कमल बिस्सा, आनन्द बिस्सा, कन्हैयालाल जी रंगा व मदन जैरी (आजाद मण्डल) के कलाकारों से प्राप्त साक्षात्कार की जानकारियाँ ली।

द्वितीयक प्रणाली

रम्मत के प्राचीन साहित्य व इतिहास की जानकारी के लिए बीकानेर अनूप संग्रहालय पुस्तकालय से और अजमेर के सावित्री कन्या महाविद्यालय बीकानेर के बिन्नानी कन्या महाविद्यालय चितौड़ के निजी पुस्तकालय से कई पुस्तकों का पठन करके उनका सहयोग किया गया जिसमें ''लोकनाटयों में संगीत'' डॉ. ज्ञानवती वैद मोहता, डॉ. मनोहर शर्मा, सत्येन्द्र शर्मा इत्यादि की पुस्तकों से कुछ अंश अवतरण किया गया।

निष्कर्ष

राजस्थान की लोक कला 'रम्मत' का सांगीतिक अध्ययन में रम्मत के प्रारम्भ से विकास तक का वर्णन किया गया है। संस्कृति के विकास के साथ–साथ इन नाट्यों का जन्म व संस्कृति से संबंध को बनाया गया है। लोकनाट्यों में 'रम्मत' और ख्याल दोनों का उल्लेख है। रम्मत को ख्याल की एक शैली मानकर उसकी शास्त्रीयता से भिन्नता दिखाई गई है। बीकानेर में प्रचलित नाट्य प्रणालियाँ, लोकसंगीत, नृत्य काव्य के लोक प्रचलित स्वरूप से है। अपनी पूर्ववर्ती परम्परा का अनुसरण और रचना धार्मिक की निरंतरता स्वतः ही कला में किसी नए आयाम की जन्मदाता का कारण रही है।

राजस्थानी लोकनाट्यों की बात करें तो बड़ी रोचक बात सामने आती है ये धुने ना ही शास्त्रीय से प्रेरित होती है और ना ही प्रचलित लोकगीतों से कुछ मेल खाती है व किसी व्यक्ति विशेष की रचना भी नहीं होती। नाट्यकृति की किसी प्रकाशित प्रति से इसका मंचन संभव नहीं माना गया है। रम्मत की कुछ हस्तलिखित प्रतियां जिसके पास है, वे उसे अपनी निजी सम्पत्ति मानते हैं और उसे उपलब्ध कराने को तैयार नहीं है। कई कलाकारों ने मुख से बताकर इस शोध कार्य को सरल बनाया। रम्मत में शास्त्रीयता के सम्बन्धों की स्वयं घोषणा नहीं की है। ऐसी स्थिति के रम्मत के प्रचलन में कम अधिक का आरोप तो हो सकता है परन्तु उसकी निरन्तरता में कोई बाधा है यदि है तो मात्र आधुनिक परिवेश की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संगीत का समाज शास्त्र– सत्यवती शर्मा।
2. लोकनाट्यों में संगीत–डॉ. ज्ञानवती वैद मोहता।
3. राजस्थान के लोकगीतों में अनुकरणात्मक प्रवृति– डॉ. मनोहर शर्मा।
4. राजस्थान के लोकगीत– डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल।
5. संगीत एक लोकनाट्य परम्परा– रामनारायण अग्रवाल।

साक्षात्कार

6. प्रहलाद मारजा व जतनलाल श्रीमाली (अचलेश्वर नवयुवक भायला मण्डल)
7. कन्हैयालाल जी रंगा व मदन जैरी (आजाद मण्डल)

❖◆❖